

।। अंतरी पेटवू ज्ञान ज्योत ।।



**NORTH MAHARASHTRA UNIVERSITY
JALGAON**

Syllabus For
M. A. Part- I
(Ist & IInd Semester)

ARDHAMAGHDI (PRAKRIT)

(w.e.f. June 2014)

उत्तर महाराष्ट्र विद्यापीठ, जळगांव

M. A. I

विषय- अर्धमागधी (प्राकृत) अभ्यासक्रम

(जून 2014 पासून)

पेपर क्र. 1- प्राकृत (चम्पू काव्य) साहित्य (PRK -111)

पाठ्यपुस्तकाचे नाव

1) कुवलयमाला- आ. उद्योतनसूरी Passage 86 to 125

(चंडसोम, मानभट्ट, मायादित्य)

प्रकाशक- शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर

संदर्भ ग्रंथ-

1) प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जे.सी. जैन

2) प्राकृत साहित्याचा इतिहास- डॉ ग.वा. तगारे

3) प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- डॉ. नेमीचंद शास्त्री

4) कुवलयमाला- सं. डॉ. अ. ना. उपाध्ये

5) भारतीय साहित्याचा इतिहास- भाग-2-सं. मुंशीराम मनोहरलाल

प्रश्नपत्रिकेचे स्वरूप व गुणविभागणी

| वेळ-3 तास | | गुण-80 |
|-----------|----------------------------------------|--------|
| प्र.1 | पाठ्यपुस्तकातील भाषांतर | 3/4 15 |
| प्र. 2 | टिपा लिहा | 2/4 10 |
| प्र.3 | दीर्घोत्तरी प्रश्न | 1/2 15 |
| प्र. 4 | पाठ्यपुस्तकातील सुभाषितांचे स्पष्टीकरण | 2/3 10 |
| प्र. 5 | वस्तुनिष्ठ प्रश्न | 10 |
| | 1) एका वाक्यात उत्तरे लिहा - | 5/5 |
| | 2) रिकाम्या जागा भरा- | 5/5 |
| | अंतर्गत निरंतर मूल्यमापन परीक्षा | 40 |

एम. ए. -भाग-1
विषय- अर्धमागधी (प्राकृत)
पेपर-2 - प्राकृत भाषा साहित्य परिचय (PRK -112)

- I) प्राकृत भाषा उद्गम आणि विकास
- II) प्राकृत साहित्यातील काव्य
- III) प्राकृत साहित्यातील सट्टक
- IV) प्राकृत साहित्यातील ग्रंथकार
(कवि हाल, उद्योतनसूरि, हरिभद्रसूरी, वट्टेकर, राजेशखर, विमलसूरी, हेमचंद्र)

संदर्भ ग्रंथ :-

- 1) प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जे.सी. जैन
- 2) प्राकृत साहित्याचा इतिहास- डॉ ग.वा. तगारे
- 3) प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- डॉ. नेमीचंद शास्त्री
- 4) भारतीय साहित्याचा इतिहास- भाग-2-सं. मुंशीराम मनोहरलाल
- 5) प्राकृत साहित्यातील श्रेष्ठ ग्रंथ व ग्रंथकार- प्रा. बी. बी. भगरे, प्रा. सौ. व्ही. बी.भगरे
- 6) प्राकृत और उसका साहित्य- डॉ. हरदेव बाहरी

प्रश्नपत्रिका स्वरूप व गुणविभागणी

| वेळ 3 तास | | गुण -60 |
|----------------------------------|--------------------|---------|
| प्र. 1 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 2 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 3 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 4 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 5 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| अंतर्गत निरंतर मूल्यमापन परीक्षा | | 40 |

पेपर-3 आगम साहित्याचा परिचय (PRK -113)

- I) श्वेतांबर आगम ग्रंथ परिचय
 - अ) आगम ग्रंथाचे वर्गीकरण
 - ब) अंगग्रंथ
- II) दिगंबर आगम ग्रंथ परिचय
 - अ) दिगंबर आगम ग्रंथाचे वर्गीकरण
 - ब) दिगंबर आगम ग्रंथ परिचय.

संदर्भ ग्रंथ :-

- 1) प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जे.सी. जैन
- 2) प्राकृत साहित्याचा इतिहास- डॉ. ग.वा. तगारे
- 3) प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- डॉ. नेमीचंद शास्त्री
- 4) भारतीय साहित्याचा इतिहास- भाग-2-सं. मुंशीराम मनोहरलाल
- 5) प्राकृत साहित्यातील श्रेष्ठ ग्रंथ व ग्रंथकार- प्रा. बी. बी. भगरे, प्रा. सौ. व्ही. बी. भगरे
- 6) प्राकृत और उसका साहित्य- डॉ. हरदेव बाहरी

प्रश्नपत्रिका स्वरूप व गुणविभागणी

| वेळ 3 तास | | गुण -60 |
|----------------------------------|--------------------|---------|
| प्र. 1 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 2 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 3 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 4 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 5 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| अंतर्गत निरंतर मूल्यमापन परीक्षा | | 40 |

पेपर-4- जैन दर्शन (PRK -114)

- i) पाच महाव्रते व अतिचार
- ii) पंचास्तिकाय
- iii) षडद्रव्ये/जैनांची विश्वसंकल्पना
- iv) मोक्ष संकल्पना
- v) ज्ञान व ज्ञानाचे प्रकार
- vi) अनेकांतवाद /स्याद्वाद

संदर्भ ग्रंथ-

- 1) प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जे.सी. जैन
- 2) प्राकृत साहित्याचा इतिहास- डॉ ग.वा. तगारे
- 3) प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- डॉ. नेमीचंद शास्त्री
- 4) भारतीय साहित्याचा इतिहास- भाग-2-सं. मुंशीराम मनोहरलाल
- 5) प्राकृत साहित्यातील श्रेष्ठ ग्रंथ व ग्रंथकार- प्रा. बी. बी. भगरे, प्रा. सौ. व्ही. बी.भगरे
- 6) प्राकृत और उसका साहित्य- डॉ. हरदेव बाहरी
- 7) भारतीय साहित्याला जैन धर्माची देणगी -सं. भामोज
- 8) पूर्णाध्य- सं.पं. सुमतीबाई शहा

प्रश्नपत्रिका स्वरूप व गुणविभागणी

| वेळ 3 तास | | गुण -60 |
|----------------------------------|--------------------|---------|
| प्र. 1 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 2 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 3 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 4 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| प्र. 5 | दिर्घोत्तरी प्रश्न | 12 |
| अंतर्गत निरंतर मूल्यमापन परीक्षा | | 40 |

समकक्ष अभ्यासक्रम-पहिले सत्र

| पेपर क्र. | जुना अभ्यासक्रम | नवीन अभ्यासक्रम |
|-----------|------------------|----------------------------|
| PRK 111 | करकंडचरिउ-कनकामर | कुवलयमाला- आ.उद्योतनसूरी |
| PRK 112 | | प्राकृत भाषा साहित्य परिचय |
| PRK 113 | | आगम साहित्याचा परिचय |
| PRK 114 | | जैन दर्शन |

अध्यक्ष,
प्राचीन भारतीय भाषा तदर्थ अभ्यासमंडळ
उ.म.वि. जळगांव

Semester - II

पेपर क्र. 5- प्राकृत कथा साहित्य (PRK -121)

पाठ्यपुस्तकाचे नांव - धूर्ताकख्याण (धूर्ताख्यान) आ. हरिभद्रसूरि

(अध्याय 1 ते 5)

(प्र. शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर)

संदर्भ ग्रंथ -

- 1) धूर्ताख्यान- सं. अ. ना. उपाध्ये
- 2) प्राकृत साहित्याचा इतिहास- डॉ. ग. वा. तगारे
- 3) जैन साहित्य और इतिहास- नथूराम प्रेमी

प्रश्नपत्रिकेचे स्वरूप व गुणविभागणी

| वेळ- 3 तास | | गुण - 60 |
|------------|----------------------------------|----------|
| प्र. 1 | पाठ्यपुस्तकातील भाषांतर | 3/4 15 |
| प्र. 2 | लघुत्तरी प्रश्न | 2/4 10 |
| प्र.3 | आलोचनात्मक /दिर्घोत्तरी प्रश्न | 1/2 15 |
| प्र. 4 | सुभाषितांचे स्पष्टीकरण | 2/3 10 |
| प्र. 5 | वस्तुनिष्ठ प्रश्न | 10 |
| | 1) एका वाक्यात उत्तरे | 5/5 |
| | 2) रिकाम्या जागा भरा | 5/5 |
| | अंतर्गत निरंतर मूल्यमापन परीक्षा | 40 |

पेपर क्र. 6- प्राकृत भाषा साहित्य परिचय (PRK -122)

पाठ्यपुस्तकाचे नांव- नम्मयासुंदरी- सं. प्रा. सौ. व्ही. बी. भगरे

(गाथा 1 ते 300)

प्रकाशक- शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर

संदर्भ ग्रंथ :-

- 1) प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जे. सी. जैन
- 2) प्राकृत और उसका साहित्य- हरदेव बाहरी
- 3) प्राकृत भाषा और साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- डॉ. नेमिचंद शास्त्री

प्रश्नपत्रिकेचे स्वरूप व गुणविभागणी

| वेळ- 3 तास | | गुण-60 | |
|------------|----------------------------------|--------|----|
| प्र. 1 | पाठ्यपुस्तकातील भाषांतर | 3/4 | 15 |
| प्र. 2 | लघुत्तरी प्रश्न | 2/4 | 10 |
| प्र.3 | आलोचनात्मक /दिर्घोत्तरी प्रश्न | 1/2 | 15 |
| प्र. 4 | गाथांचे स्पष्टीकरण | 2/3 | 10 |
| प्र. 5 | वस्तुनिष्ठ प्रश्न | | 10 |
| | 1) एका वाक्यात उत्तरे | 5/5 | |
| | 2) रिकाम्या जागा भरा | 5/5 | |
| | अंतर्गत निरंतर मूल्यमापन परीक्षा | | 40 |

पेपर क्र. 7- आगम साहित्याचा परिचय (PRK -123)
पाठ्यपुस्तकाचे नांव- नायाधम्मकहा - सं. प्रा. बी. बी. भगरे
प्रकाशक- आप्पा खंडू भगरे ट्रस्ट, मरवडे

संदर्भ ग्रंथ -

- 1) पूर्णार्ध- संपा. पं. सुमतीबाई शहा
- 2) भारतीय साहित्याला जैन धर्माची देणगी-सं. डॉ. भामोज
- 3) प्राकृत साहित्याचा इतिहास- डॉ. ग. वा. तगारे

प्रश्नपत्रिकेचे स्वरूप व गुणविभागणी

| वेळ- 3 तास | | गुण-60 |
|------------|----------------------------------|--------|
| प्र. 1 | पाठ्यपुस्तकातील भाषांतर | 3/4 |
| प्र. 2 | लघुत्तरी प्रश्न | 2/4 |
| प्र.3 | आलोचनात्मक /दिर्घोत्तरी प्रश्न | 1/2 |
| प्र. 4 | गाथांचे स्पष्टीकरण | 2/3 |
| प्र. 5 | वस्तुनिष्ठ प्रश्न | 10 |
| | 1) एका वाक्यात उत्तरे | 5/5 |
| | 2) रिकाम्या जागा भरा | 5/5 |
| | अंतर्गत निरंतर मूल्यमापन परीक्षा | 40 |

पेपर क्र. 8- जैन दर्शन (PRK -124)
पाठ्यपुस्तकाचे नाव- अष्टपाहुड- आचार्य कुंदकुंद
(अध्याय 1 ते 5)
प्रकाशक- शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापूर

संदर्भ ग्रंथ -

- 1) प्राकृत साहित्य का इतिहास- डॉ. जे. सी. जैन
- 2) भारतीय साहित्याला जैन धर्माची देणगी- डॉ. भामोज
- 3) प्राकृत साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास- डॉ. नेमीचंद शास्त्री

प्रश्नपत्रिकेचे स्वरूप व गुणविभागणी

| वेळ- 3 तास | | गुण-60 | |
|------------|----------------------------------|--------|----|
| प्र. 1 | पाठ्यपुस्तकातील भाषांतर | 3/4 | 15 |
| प्र. 2 | लघुत्तरी प्रश्न | 2/4 | 10 |
| प्र.3 | आलोचनात्मक /दिर्घोत्तरी प्रश्न | 1/2 | 15 |
| प्र. 4 | गाथांचे स्पष्टीकरण | 2/3 | 10 |
| प्र. 5 | वस्तुनिष्ठ प्रश्न | | 10 |
| | 1) एका वाक्यात उत्तरे | 5/5 | |
| | 2) रिकाम्या जागा भरा | 5/5 | |
| | अंतर्गत निरंतर मूल्यमापन परीक्षा | | 40 |

समकक्ष अभ्यासक्रम-दूसरे सत्र

| पेपर क्र. | जुना अभ्यासक्रम | नवीन अभ्यासक्रम |
|-----------|--------------------------|------------------------------------------------|
| PRK 121 | कुवलयमाला-आ. उद्योतनसूरी | धूताकखाण (धूर्ताख्याणं)- आचार्य हरिभद्रसूरि |
| PRK 122 | | नम्मयासुंदरी-सं. प्रा. सौ. व्ही. बी. भगरे |
| PRK 123 | | नायाधम्मकहा |
| PRK 124 | | अष्टपाहुड-आचार्य कुंदकुंद |

अध्यक्ष,
प्राचीन भारतीय भाषा तदर्थ अभ्यासमंडळ
उ.म.वि. जळगांव

रोजगाराच्या संधी :-

अलिकडे केंद्रीय लोकसेवा आयोगाकडून घेतल्या जाणाऱ्या विविध नागरी सेवा करीता प्राचीन भारतीय भाषा अर्धमागधी पाली भाषा व साहित्याचा पर्याय वापरण्याकडे विद्यार्थ्यांचा कल वाढत आहे. हे लक्षात घेता रोजगाराची संधी म्हणून प्राचीन भारतीय भाषा महत्त्वाच्या ठरल्या आहेत.

आज जागतिकीकरणाच्या युगात पाली, अर्धमागधी प्राकृत, संस्कृत या भाषांना अत्यंत महत्त्वाचे स्थान आहे. M.P.S.C./ U.P.S.C. या परीक्षेसाठी वरील विषयांचा समावेश असल्यामुळे विद्यार्थ्यांना रोजगाराच्या संधी उपलब्ध होत आहेत.

प्राचीन भारतीय भाषांचा तुलनात्मक अभ्यास करण्याकरिता देखील संधी उपलब्ध आहेत.